दिनांक :- 27-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)
स्नातक :- द्वितीय खंड इतिहास
विषय प्रतिष्ठा इतिहास
इकाई तृतीय
पत्र चतुर्थ
अध्याय :- तैपिंग विद्रोह

(a) तात्कालिक कारण:- हुंग की लोकप्रियता दिन प्रतिदिन बढ़ती गई ! उसने अपने को ईसा का छोटा भाई घोषित किया और कहा कि भगवान ने उसे भ्रष्ट मंचुओं के विनाश के लिए भेजा है ! उसने अपने को ईश्वरीय सम्राट बतलाया और कहा कि उसका उद्देश्य एक नवीन शासन व्यवस्था पूर्ण शांति की स्थापना करना है ! उसकी वाणी को लोगों ने ईश्वर-वाणी समझा और उसपर विश्वास कर लिया। यह घटना 11 जनवरी (1851) की है।

हुंग की अनुयायियों की संख्या तीस हजार तक हो गई

हुंग की गतिविधियों मंचू सरकार के कान खड़े हो गए। सरकार के हुंग के आंदोलन को कुचलने के लिए सैनिक कारवाई का आदेश दे दिया। कई स्थानों पर हुंग के अनुयायियों और शाही फौज में मुठभेड़ हुई। शाही फौज कई जगह पराजित भी हुई। 25 सितम्बर 1851 को तैपिंग विद्रोहियों ने यूनान पर अधिकार कर तैपिंग-तीएन-कुओ (महान् शांति का दैवी साम्राज्य) की घोषणा कर दी। हुंग तीएन वांग (दिव्य शासक) बना। इसके उपरान्त विद्रोहियों ने अनेक सफलताएँ प्राप्त की। उनकी सेना हुनान में प्रविष्ट कर गई। 1852 में हुनान की राजधानी चांगशा उनके अधिकार में आ गया। विद्रोही यांगत्सी होते हुए नानकिंग तक पहुँच गए। हुंग ने इसका नाम बदलकर थियनचिंग (दिव्य राजधानी) रख दिया। तैपिंग विद्रोहियों की यह राजधानी बन गई। मई 1853 में उनकी एक सेना चली

की ओर बढ़ी, लेकिन मंगोल घुड़सवारों के आगे उन की एक न चली।
विद्रोही दमन - तेपिंग विद्रोह जटाधारी थे, अतः उन्हें जटाधारी विद्रोही (Long haired Rebels) कहा जाता है। उन्हें यांगत्सी, हुनान आदि स्थानों में बड़ी सफलता मिली किंतु, उनकी यह विजय क्षणिक साबित हुई। 1853 से 1864 तक तो विद्रोह की गति शीलता बनी रही, लेकिन इसके बाद यह लुप्तप्राय हो गयी। विद्रोह दमन में त्सेंग कुओ फान नामक एक योग्य केन्द्रीय अधिकारी ने बड़ा महत्वपूर्ण भाग लिया। उसने अपना एक अगला सैन्य-संगठन कायम किया और विद्रोहियों से लोहा लिया। उसने विद्रोहियों को यांगत्सी से मार भगाया तथा उनकी राजधानी नानकिंग को घेर लिया और उस पर अधिकार कर लिया। उसने विद्रोहियों को समुद्र की ओर खदेड़ दिया तेपिंग विद्रोही प्रोटेस्टेंट धर्म से प्रभावित थे।

Scanned with CamScanner

अतः प्रारंभ में ऐसी कल्पना की गई थी कि अंग्रेज़ प्रोटेस्टेंट-प्रधान देशों को शीघ्र ही मान्यता मिल जाएगी। किंतु चीन कैथोलिक इस मान्यता के पक्ष में नहीं थे। प्रारंभ में ब्रिटेन ने तो विद्रोहियों को मान्यता देने और मंचू सरकार के विरुद्ध कार्रवाई करने का विचार किया। किंतु अमेरिका की नीति ठीक इसके विपरीत थी। वह चीनी सम्राट की मदद करने के पक्ष में था। 1859 तक संधियों की पुनरावृत्ति और तेपिंग विद्रोहियों की वास्तविक प्रकृति के स्पष्ट हो जाने पर ब्रिटेन ने अपना इरादा बदल दिया और अमरीकी नीति का समर्थन किया। यह नीति सम्राट का साथ देने की और विद्रोहियों का कुचलने की थी।

1853 में शंघाई पर विद्रोहियों का अधिकार हो जाने से विदेशियों पर प्रत्यक्ष खतरा उत्पन्न हो गया। इसी समय फ्रेडरिक टो० वार्ड नामक एक अमेरिका ने शंघाई के

ब्रिटिश अधिकारियों के विद्रोह के बावजूद एक गिरोह तैयार किया जो विद्रोहियों के अधिकार से कुछ कस्बों को मुक्त करने में सफल रहा।

तेपिंग विद्रोहियों का एकलक्ष्य यूरोपीय साम्राज्यवाद को मूलोच्छेदन भी था। अतएव विदेशी चाहते थे कि चीन में कमजोर मंचू सरकार कायम रहे और वे अपना उल्लू सीधी करते हैं। इसी संदर्भ में उन्होंने मंचू सरकार कायम रहे और समक्ष में यह प्रस्ताव रखा कि यदि वह उन्हें तीस लाख तायल चाँदी देने को तैयार हो जाए तो विदेशी फौज तेपिंग - विद्रोहियों के दमन में मदद कर सकती है। सम्राट ने इस प्रस्ताव को मान लिया। 1862 में फ्रेडरिक टी०वार्ड का देहान्त हो गया। अतः सी०जी० गोर्डन नामक एक अंग्रेज पदाधिकारी की अधीनता में एक सतत विजयी वाहिनी (Ever Victorious Army)

का गठन किया गया। फ्रांस रूस तथा अमरीका की मदद से ब्रिटेन ने विद्रोह को कुचल दिया। विद्रोह दमन में चीन के केन्द्रीय अधिकारियों त्सेंग कुओ-फान और ली हुंग-चांग ने बड़ा हाथ बटाँया। दिसम्बर 1863 में विद्रोहियों के दमन सर्वाधिक शक्तिशाली गढ़ सुचाउ का पतन हो गया। 1864 में नानकिंग पर भी अधिकार हो गया। दैवी राजहुंग-सिऊ-चुआन ने आत्महत्या कर ली। 1864 तक तैपिंग विद्रोह का दमन कर दिया गया।

परिणाम:- यद्यपि तैपिंग विद्रोह असफल रहा, तथापि इसके महत्वपूर्ण परिणामों की अपेक्षा नहीं की जा सकती। इसके सुदूरगामी परिणामों के फलस्वरूप 1911 में मंचू राजवंश का पतन हुआ। तैपिंग विद्रोह के परिणामों की चर्चा निम्नलिखित तथ्य-बिंदुओं में की जा सकती है।

(1) तैपिंग-शासन-लगभग दस वर्षों (1854-1864) तक नान

किंग पर तैपिंग शासन रहा! इसका संचालन छह समितियों द्वारा होता था! कई हजार परिवारों को मिला कर एक प्रशासनिक इकाई बनाई गई थी। जिसे स्वायत्त शासन प्राप्त था! सहकारी समितियाँ गठित की गई थी जो आर्थिक जीवन में महत्त्वपूर्ण भाग लेती थी। वस्तुतः यह साम्यवादी चीन की कम्यून - प्रथा का पूर्वगामी रूप था।

(2) भूमि - सुधार - तैपिंग विद्रोह अंशतः एक कृषि - विद्रोह था! अतः तैपिंग प्रशासन ने सर्वप्रथम भूमि - सुधार की ओर ध्यान दिया। 1853 में तैपिंग शासन ने भूमि सुधार की घोषणा की! इसमें कहा गया, भूमि किसानों की है, क्योंकि वे खेती करने के योग्य है! इसलिए उन पर किसानों का ही स्वामित्व होना चाहिए! सारी भूमि का राष्ट्रीयकरण और समूहीकरण कर दिया गया।

Scanned with CamScanner